सं भो वि. | प्रस्वाला / 346-83 / 63944. - चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राए है कि मैसर्ज लाडी को आपरेटिव सर्विस एण्ड केंडिट सोसायटी, लि॰, लांडी, जिला कुरुक्षेत्र के श्रामिक श्री जयपाल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामने में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिविनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियागा के राज्यात इस हे द्वारा सरहारी श्रीविस्त्वना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ दिने हुए श्रीविस्त्वना सं. -11 495-शो-श्रन-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीधिनियम की घारा 7 के ग्रीवीन गिठित श्रम न्यायालय, फरोदाबाद, को विवाद ग्रस्त या उसने सुसंगत या उसने सबस्थित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के जिए निर्देश्य करते हैं हैं जोकि उक्त प्रवत्थकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रायवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री जयपाल सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो.वि./हिसार/94-83/63950 — चूंकि हरियाणा के राज्यनाल की राय है कि मैं \circ (1) भारतीय कृषि श्रनुसंधान संस्थान रिजनत रिर्ज व स्टेशन, सिरसा (2) भारतीय कृषि भ्र नुसंज्ञान संत्यान, न \circ दिल्ली के श्रीमिक श्री भ्रशोक कुमार तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उमझारा (1) के खेण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं० 9641-1-श्रम/7 0/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रधिसूचना सं० 3864-ए.एस.ग्रो (ई) श्रव-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामता है या उक्त विवाद से.मुनंगन या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री ग्रशोक कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो.वि./हिसार/ 123-83/63 956.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० हिसार टैक्सटाईल मिल, हिसार के श्रमिक श्री नरेन्द्र सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपद्यारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/2/32573, दिनांक 6 नवश्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ.(ई)श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 दारा उक्त अधिनियम की द्यारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:——

क्या श्री नरेन्द्र सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० म्रो. वि./एफ. डी./172-83/63962.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं० रीटा इन्डह्टीज, राजेन्द्र फार्म, लिंक रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री कृष्ण कृषार सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौगोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, सब, श्रीद्योगिक विवाद श्रीविनयम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी सिधसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, विनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्राधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उनत ग्राधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विनादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्मार्यनिर्णय के लिए निदिष्ट करते हैं जो कि उन्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री कृष्ण कुमार सिंह की सेवाओं का समापन न्थायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिमांक 8 दिसम्बर, 1983

सं श्रो.वि./करनाल/80-83/64291 — चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं. क्षेत्रीय स्टेशन भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, करनाल के श्रमिक श्री जनेश्वर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई • श्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यभाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7क के अधीन औद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदावाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले अमिक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्यां श्री जनेश्वर की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्री.वि./भिवानी/47-83/64297.-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज हरियाणा स्टेट फेडरेशन कोपरेटिय कन जुमर स्टोर लि॰, भिवानी के श्रीमक श्री भिवानी शंकर तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हुँ;

इस लिए, अब, भौबोगिक विवाद भिधितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल, इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं० 3864-ए.एस.ओ. (ई)श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंग तथा उससे रूसम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री भिवानी शंकर की सेवाझों का समापन न्यायोजित तथा ठीक हैं ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./रोहतक/219-83/64304.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. ए. कें. इन्डस्ट्रीज मार्डन इण्डस्ट्रीयल इस्टेंट वहादुरगढ़, (रोहतक) के श्रमिक श्री भगवान प्रसाद तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिके विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिवितियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिधसूचना सं० 3864-ए.एस.ग्रो.(ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिवित्यम की घारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय होतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

- क्या श्री भगवान प्रसाद की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नृहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?